मैं आप से व्यवस्था चाहता हूं । जिस खास बात का उत्तर देना हो, जिस बात के ऊपर ध्यान आकर्षण हो और जो उन के ही महकमे से सम्बन्धित हो, उस के बारे में अगर मंत्री महोदय कहें कि मुझे जानकारी नहीं है तो वह सदन को जानकारी किस तरीके से दे सकेंगे ।

अध्यक्ष महोदय : जो कवायद सवालों के लिये हैं वही कालिंग अटेंशन नोटिस के लिये हैं । अगर मिनिस्टर के पास जानकारी न हो तो वह कह सकते हैं कि यह जानकारी इस वक्त मेरे पास नहीं है ।

श्री बागड़ी : यह मामला उन के महकमे का है ।

डा० राम मनोहर लोहिया : यह व्यवस्था का प्रश्न है । आप मेहरबानी कर के लोक सभा की प्रक्रिया तथा कार्यसंचालन संबधी नियमों के अधीन अध्यक्ष द्वारा दिये गये निर्देश देखिये और कार्य का क्रम देखिये ।

अध्यक्ष महोदय : मैं कुछ कह दूं तो शायद आप की मदद हो जाये । इस में कालिंग अटेंशन नोटिस बाद में लिखे हुए हैं, लेकिन जब मैं ने कहा था कि ऐडजर्नमेंट मोशन जो होते हैं उन की जगह कालिंग अटेंशन नोटिस दिये जायें उस के बाद से हम उन को पहले लिया करते हैं । इस की तब्दीली हो गई है । अगर इस के रिफरेंस में कुछ कह रहे हों तो पोजीशन यह है, अगर और कुछ कहना हो . . . . .

डा० राम मनोहर लोहिया : नं० 2 पर है विशेषाधिकार का प्रश्न और नं० 4 पर है ध्यान दिलाने वाली सूचनायें । तो मैं बिल्कुल अपने हक पर बोल रहा था । लेकिन मेरी मुसीबत यह है कि हम लोग हिन्दुस्तानी में बोलते हैं, इसलिये हमारे साथ अन्याय हो जाया करता है और हम दबा दिये जाते हैं, दूसरे दर्जे के सदस्य मान लिये जाते हैं । अब आप यहां पर देखिये कि लिखा हुआ है . . .

अध्यक्ष महोदय : मैं आप से यही कह रहा था कि जब हम ने यह फैसला किया कि यहां ऐडजर्नमेंट मोशन ज्यादा न आयें क्योंकि उन का मतलब कालिंग अटेंशन नोटिस से होता है, तब से हम ने इस को उठा कर पहले रख दिया है । तब से पहले क्वेश्चन अवर उस के बाद एडजर्नमेंट मोशन और फिर कालिंग अटेंशन नोटिस लिया जायेगा । यही मेरी आप से विनती है । अगर आप यह प्वाइंट आउट करना चाहते हैं कि जो इस में लिखा हुआ है उस के अलावा कोई चीज हो रही है, तो कोई कंट्रैडिक्शन है, तो ऐसा नहीं है । सारे हाउस ने इस का फैसला कर के इस को पहले रक्खा हुआ है । इस वास्ते इस को जतलाने की जरूरत नहीं । जिस तरतीब में इसे आना चाहिए उसी तरतीब में मैं इस को ले रहा हूं ।

डा० राम मनोहर लोहिया : तो इस किताब को आप बदलवा दीजिये । आज तक हम लोग इसी को मान रहे थे ।

अध्यक्ष महोदय : बहुत अच्छा मैं किताब बदलवा दूंगा ।

12.32 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE

NOTIFICATIONS UNDER MINES AND MINERALS (REGULATION AND DEVELOPMENT) ACT, 1957

The Deputy Minister in the Ministry of Steel and Mines (Shri P. C. Sethi): Sir, I lay on the Table a copy each of the following Notifications under sub-section (1) of section 28 of the Mines and Minerals (Regulation and Development) Act, 1957:—

(i) The Mineral Concession (First Amendment) Rules 1965, published in Notification No. G.S.R. 140 dated the 23rd January, 1965.

[Shri P. C. Sethi]

(ii) S.O. 261 dated the 23rd January, 1965.

(iii) S.O. 329 dated the 30th January, 1965.

[*Placed in Library. see* No. LT-3920/65].

NOTIFICATION UNDER COFFEE ACT

The Deputy Minister in the Ministry of Commerce (Shri S. V. Ramaswamy): Sir, I lay on the Table a copy of the Coffee (Amendment) Rules, 1965, published in Notification No. G.S.R. 139 dated the 23rd January, 1965, under sub-section (3) of section 48 of the Coffee Act, 1942. [*Placed in Library. see* No. LT-3803/65].

12.33 hrs.

RE: QUESTION OF PRVILEGE

Mr. Speaker: I take up the privilege motion of Shri Maniram Bagri.

श्री बागड़ी (हिसार) : अध्यक्ष महोदय, 2 तारीख को जब माननीय प्रधान मंत्री जी यहां भाषण दे रहे थे, डा० राम मनोहर लोहिया ने कहा था कि प्रधान मंत्री अंग्रेजी में भाषण दे रहे हैं जबकि उन की मातृ भाषा हिन्दी है । इस के उत्तर में माननीय शास्त्री जी ने कहा कि "मैं इस वक्त अंग्रेजी में बोल रहा हूं और बोलूंगा, लेकिन आगे मैं हिन्दी में बोलूंगा ।" लेकिन पी० टी० आई०, पी० आई० बी० आदि के अखबारों में और स्टेट्समैन में जो कुछ 3 तारीख को छपा उस के अन्दर कहा गया कि "हिन्दी टू" यानी हिन्दी में भी और अंग्रेजी में भी । इस का मतलब हां और न में बदल गया, और जनता पर इस का बड़ा गलत असर पड़ा, ऐन इसी तरीके से जैसे कि हम ने कहा कि प्रधान मंत्री की मातृ भाषा हिन्दी है, इसलिये प्रधान मंत्री हिन्दी में बोलें । यानी जिस प्रधान मंत्री की भाषा हिन्दी हो वह हिन्दी में बोलें और अगर उन की मातृ भाषा हिन्दी न हो तो चाहें तो अंग्रेजी में बोलें । लेकिन इस को बहुत गलत ढंग से छापा गया, जिस का यह असर पड़ता जा रहा है कि कम से कम सात आठ ऐसे खत हमारे पास आये हैं अहिन्दीभाषी प्रान्तों से जिन में कत्ल की धमकी दी गई है । इस का एक कारण है कि जो चौदह बड़ी बड़ी एजेन्सियां हैं इत्तला देने वाली, उन के अन्दर कम से कम दस अंग्रेजी भक्त शामिल हैं जो अंग्रेजी भाषा को हर तरीके से आगे रखना चाहते हैं । मैं निवेदन करूंगा कि ऐसी बातें जिन का गलत मतलब निकले, देश के अन्दर अशान्ति फैलाती हैं । इन बातों को रोकने के लिये, इस को विशेषधिकार समिति के सुपुर्द किया जाये ।

Mr. Speaker: Would the Prime Minister like to say anything on this?

प्रधान मंत्री तथा अणु शक्ति मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री) : मैं ने जो कहा था कि मैं आगे हिन्दी में बोलूंगा तो उस का यह मतलब तो नहीं है कि मैं अंग्रेजी में नहीं बोलूंगा । यह तो उस का तात्पर्य नहीं था । मेरा मतलब भी यह नहीं था । यह ठीक है कि मैं हिन्दी में बोलूंगा । अंग्रेजी में भी बोलूंगा, जैसा अवसर हो । लेकिन मेरे कहने का मतलब यह नहीं था कि मैं अंग्रेजी में नहीं बोलूंगा । ऐसा मेरा कोई तात्पर्य नहीं था ।

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद): इस पर मुझे कुछ अर्ज कर लेने दीजिये ।

अध्यक्ष महोदय : देखिये डाक्टर साहब, जब आप तीनों के नाम हैं तो मैं ने एक सदस्य को सुन लिया । अब यह जरूरी नहीं कि हर एक को सुना जाये ।

डा० राम मनोहर लोहिया : यह बिल्कुल सही है, लेकिन प्रधान मंत्री जी ने जो फरमाया है, उस पर मुझे कुछ कहने दिया जाये, क्योंकि इस के नतीजे बड़े खतरनाक होते हैं ।

अध्यक्ष महोदय : अब आप बैठ जाइये । मेरी बात सुनिये ।